पद ५८ (आरती)

जयदेव जयदेव जय जय गुरुभूपा। आरती ओवाळू तुज सच्चिद्रूपा।।ध्रु.।। भक्ति स्नेह सद्गुरुवाक्य हे वर्ति। पात्र सोज्वल केलें निज चित्तवृत्ति। त्यांत लावोनियां सुज्ञान ज्योती। पाजळली श्रीगुरु माणिकप्रभु मूर्ति।।१।। सत्यज्ञानानंत सकलांतरवासी। सर्व

स्वरूपें गाती निगमागम तुजसीं। भक्तमनोरथपूरक तूं एक अससी। दास मनोहर ठेवी निज पायापाशीं।।२।।